विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) वर्ष 26 : अंक 41 : नई दिल्ली : 1- 7 जनवरी 2021

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के लिए ३१ दिसम्बर २०२०

आध्यात्मिक संपोषण-१७

संदर्भ : कोरोना वायरस

१. सभी चारित्रात्माएं, समणश्रेणी सदस्य, संघीय संस्था सदस्य और अन्य श्रावक-श्राविकाएं समता और अभय का भाव रखने का प्रयास रखें, सोश्यल डिस्टेंसिंग आदि के रूप में समुचित सावधानी भी रखें।

२. वर्तमान समस्या के संदर्भ में सरकार और प्रशासन के द्वारा निर्दिष्ट व्यवस्था के प्रति समुचित सजगता रखनी चाहिए।

३. प्रतिदिन रात्रि १२ बजे से दिन के १२ बजे के बीच 'चइत्ता भारहं वासं' श्लोक का कम से कम २१ बार यथासंभव पाठ किया जाना चाहिए।

४. साधु-साध्वियां व समणश्रेणी सदस्य गोचरी आदि किसी प्रायोजन से अपने प्रवास स्थल परिसर से बाहर हों, तब यथासंभव मास्क अथवा अन्य कुछ आवरण अपने मुख व नासिका पर यथानुकूलता लगाए रखें।

५. आध्यात्मिक संपोषण-३ (धारा ४ से ७) में उल्लिखित गोचरी विषयक सुविधाओं का आवश्यकतानुसार उपयोग करना अनापत्तिपूर्ण है।

६. यथासंभव गृहस्थ चारित्रात्माओं के चरणस्पर्श न करें।

७. सामान्यतया रात्रि में कोई कार्यक्रम, सम्मेलन, संगोष्ठी आदि नहीं रखा जाए। दैनन्दिन उपासनापरक अर्हत् वन्दना आदि उपक्रम चल सकते हैं, शनिवार को ७ से ८ के बीच सामायिक का उपक्रम भी चल सकता है, दिन में अनुकूलता के अनुसार प्रवचन कार्यक्रम आदि किए जा सकते हैं, परन्तु प्रशासनिक नियमों का अतिक्रमण न हो, यह ध्यातव्य है।

८. यह संदेश तेरापंथी सभाओं के पास पहुंच जाए तो वे अपने क्षेत्र में व अपने क्षेत्र के आसपास प्रवासित चारित्रात्माओं व समणश्रेणी सदस्यों को इससे अवगत करा सकती हैं।

नोट - यह संदेश (आध्यात्मिक संपोषण-१७) ३१ जनवरी २०२१ तक तो अनुसरणीय है ही, उसके बाद भी नए निर्देश तक यही संदेश अनुसरणीय रहे।

आंध्रप्रदेश

आचार्य महाश्रमण

परम पूज्य आचार्यप्रवर अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए सानन्द सुखसातापूर्वक रायपुर की ओर गतिमान हैं। आचार्यप्रवर तेलंगाना की यात्रा सम्पन्न कर आंध्रप्रदेश की सीमा में पधार गए हैं और कुछ ही दिनों में छत्तीसगढ़ में प्रवेश भी निर्धारित है। कई राज्यों की सीमाओं पर बसा यह क्षेत्र जंगल के रूप में है और यह जंगल भारत में नक्सल गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र के रूप में विख्यात है। इस पथ से अब तक न केवल तेरापंथ धर्मसंघ, अपितु किसी अन्य जैन समुदाय की भी इतनी बड़ी पदयात्रा हुई हो, ऐसा ज्ञात नहीं है। तेरापंथ धर्मसंघ के तो साधु-साध्वियों का भी संभवतः प्रथम बार गीदम आदि क्षेत्रों में पदार्पण होने जा रहा है। आचार्यप्रवर पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार १७ जनवरी को गीदम, २३ जनवरी को जगदलपुर और १ फरवरी को केशकाल में पधारेंगे। तदुपरान्त १४ फरवरी को रायपुर (छत्तीसगढ़) में मर्यादा महोत्सव हेतु मंगल प्रवेश करेंगे। वहां पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में १६-१९ फरवरी को मर्यादा महोत्सव समायोज्य है। कोविद-१९ की स्थिति के मद्देनजर धर्मसंघ के इस गरिमामय प्रतिष्ठित समारोह के संदर्भ में तेरापंथी महासभा द्वारा तेरापंथ समाज के लिए कुछ व्यवस्थाएं बनाई गई हैं, जो इसी विज्ञप्ति में प्रकाशित हैं। २१ फरवरी को रायपुर में दीक्षा समरोह भी आयोज्य है, जिसके लिए आचार्यप्रवर ने अब तक एक श्रेणी आरोहण सहित तीन दीक्षाएं घोषित कर दी हैं। विज्ञप्ति के सभी पाठकों को नववर्ष की शुभकामनाएं।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण रायपुर की ओर

८ दिसम्बर। प्रातः परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के विहार से पूर्व मेट्टुगुड़ावासियों ने संक्षिप्त कार्यक्रम आयोजित कर पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपनी-अपनी प्रस्तुतियां दीं। आचार्यप्रवर ने उपस्थित जनता को पावन प्रेरणा प्रदान की। तदुपरान्त पूज्यप्रवर मेट्टुगुड़ा से बंडलागुड़ा की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में हब्सीगुड़ा-हैदराबाद के निवासी श्रद्धालुजनों तथा हब्सीगुड़ा जैन संघ के लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्यप्रवर करीब ११.५ कि.मी. का विहार कर बंडलागुड़ा में स्थित इंदु इन्टरनेशनल स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में तपस्या के महत्त्व को विवेचित किया।

हैदराबादवासियों द्वारा आयोजित हुआ मंगलभावना समारोह

९ दिसम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः बंडलागुड़ा से अबदुलपुरपेट के लिए प्रस्थित हुए। हालांकि आज का प्रवास भी बृहत्तर हैदराबाद की सीमा में ही था, किन्तु विहार के प्रारंभिक मार्ग के आसपास आबादी की न्यूनता, वृक्षों आदि की सघनता और सड़क का संकड़ापन किसी ग्रामीण क्षेत्र में होने का अहसास करा रहे थे। इस पथ में एक स्थान पर गंतव्य की ओर जाने के दो मार्ग थे, किन्तु दोनों में दूरी का काफी अन्तर था। कार्यकर्ताओं की भूल के कारण लम्बी दूरी वाले पथ पर पूज्यप्रवर का पदार्पण हो गया। करीब २५० मीटर ही आगे बढ़े थे, सूचना मिली कि यह पथ अधिक दूरी वाला है, तुरन्त भूल सुधार कर पूज्यप्रवर से दूसरे पथ पर पधारने का अनुरोध किया गया। पूज्यप्रवर पुनः मूल पथ पर पधारे। इस मार्ग पर कुछ दूरी तक और चलने के उपरान्त राजमार्ग प्रारंभ हो गया।

कोरोना के संदर्भ में बचाव की दृष्टि से पूज्यप्रवर सहित चारित्रात्माओं के मुख पर मास्क लगे हुए थे। राजमार्ग पर यातायात की अधिकता के कारण व्याप्त प्रदूषण मास्क की उपयोगिता को और भी प्रासंगिक बना रहा था। प्रदूषण इतना अधिक था कि गंतव्य तक पहुंचते-पहुंचते मास्क का रंग भी बदला-बदला-सा नजर आने लगा। पूज्यप्रवर करीब १३ किलोमीटर का विहार कर अबदुलपुरपेट में स्थित संजय गांधी मेमोरियल गवर्नमेन्ट पॉलिटेक्निक कॉलेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। प्रवास स्थल से सुप्रसिद्ध रामोजी फिल्म सिटि का विशाल द्वार स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

पूज्यप्रवर द्वारा हैदराबाद के घोषित प्रवास की सम्पन्नता के संदर्भ में आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में हैदराबादवासियों की ओर से मंगलभावना कार्यक्रम रहा। कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में जीवन की अनित्यता का विवेचन किया। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'परम पूज्य आचार्य भिक्षु जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम आचार्य थे। उन्होंने साधना का पथ स्वीकार किया। वे चले तो एक पंथ तैयार हो गया। उनकी उत्तरवर्ती आचार्य परम्परा चली, फिर परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी हुए। वे जीवन के क्रमशः बारहवें और ग्यारहवें वर्ष में साधु बन गए थे।

आचार्य तुलसी ने दक्षिण भारत की भी यात्रा की थी। आचार्य महाप्रज्ञजी मुनि अवस्था में उनके साथ दक्षिण यात्रा में थे। हम अभी दक्षिण में हैं और हैदराबाद की सीमा में हैं। ऐसा बताया गया है अब हैदराबाद की सीमा छूटने वाली है। इसे पार कर आगे बढना है। क्षेत्र का परिवर्तन हो सकता है, किन्तु अच्छा कार्य चलते रहना चाहिए। बृहत्तर हैदराबाद की सीमा में हमारा चतुर्मास हुआ। कल संभवतः इस शहर की सीमा छूटने वाली है। हैदराबाद के लोगों में खूब धर्म की भावना बनी रहे। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति जैसे सूत्र जैन एवं जैनेतर लोगों के जीवन में आत्मसात बने रहें, जीवन में धार्मिक साधना चलती रहे। हैदराबाद में तेरापंथ समाज के लोगों में शनिवार की सायं सात से आठ बजे के बीच सामायिक का क्रम यथासंभव चलता रहे, और भी यथासंभव धार्मिक साधना चलती रहे। मंगलकामना।'

चातुर्मास व्यवस्था समिति-हैदराबाद के अध्यक्ष श्री महेन्द्र भंडारी, महामंत्री श्री मनोज दूगड़ व वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अशोक बरमेचा, सहमंत्री श्री राजेन्द्र बोथरा, स्थानीय तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष श्री मोहित बैद, श्रीमती सरोज भंडारी, श्रीमती सरला भूतोड़िया, तेरापंथ युवक परिषद की ओर से श्री नवनीत छाजेड़ और तेरापंथी सभा-सिकन्दराबाद के अध्यक्ष श्री सुरेश सुराणा ने पूज्यचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए। तेरापंथ महिला मंडल-हैदराबाद ने गीत को प्रस्तुति दी।

दीक्षा कल्याणक दिवस के अवसर पर प्रभु महावीर का सश्रद्धा स्मरण

१० दिसम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः अबदुलपुरपेट से मलकापुर की ओर प्रस्थान किया। पूज्यप्रवर गतरात्रिक प्रवास स्थल से कुछ दूर पधारे तो रामोजी फिल्म सिटि का मुख्यद्वार और भी निकट हो गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार करीब दो हजार एकड़ में फैला हुआ रामोजी फिल्म सिटि दुनिया का सबसे बड़ा फिल्म स्टुडियो है। दक्षिण के प्रसिद्ध फिल्म निर्माता श्री रामोजी राव द्वारा सन् १९९६ में स्थापित इस स्टुटियो में एक साथ १५ से २५ फिल्मों की शूटिंग की जा सकती है। इस स्टुडियो में फिल्म की कल्पना से लेकर प्रोडक्शन तक के सभी सहयोगी संसाधन उपलब्ध हैं अर्थात् फिल्म निर्माण की पूर्व भूमिका, फिल्म निर्माण और उसके प्रचार-प्रसार से संबंधित हर प्रकार की सामग्री जैसे-सैंकड़ों उद्यान, करीब पचास स्टुडियो फ्लोर, डिजिटल फिल्म निर्माण की सुविधाएं, आउटडोर लोकेशन, उच्च तकनीकी से युक्त प्रयोगशालाएं, तकनीकी सहायता, कॉस्ट्यूम डिजाइन लोकेशन, मेक-अप, सेट-निर्माण, तैयार साज-सज्जा, कैमरा, फिल्म निर्माण उपकरण, ओडियो प्रोडक्शन, डिजिटल पोस्ट प्रोडक्शन, फिल्म प्रोसेसिंग व्यवस्था आदि की विभिन्न प्रकार की सुविधाएं यहां उपलब्ध हैं। यहां न केवल देशी, अपितु विदेशी फिल्मों का भी निर्माण होता है। यहां के उद्यान, सेट्स और अन्य सुविधाएं पर्यटकों को अनायास आकृष्ट कर लेती हैं। प्रतिवर्ष यहां लाखों पर्यटक आते हैं और यहां के उद्यान आदि का शादियों में भी भरपूर उपयोग होता है। पूज्यप्रवर की अनुमति प्राप्त कर कुछ साधु-साध्वियां गत कल रामोजी फिल्म सिटि में गए और सभी साध्वियां और एक संत गत कल ही पुनः आचार्यप्रवर के पावन सन्निध्य में पहुंच गए तथा शेष संत आज पूज्यसन्निधि में पहुंचे।

आचार्यप्रवर आज बृहत्तर हैदराबाद की सीमा से बाहर पधार गए। इस प्रकार आचार्यप्रवर का करीब साढे पांच महीनों से अधिक समय का हैदराबाद का प्रवास सानन्द सुसंपन्न हो गया। पूज्यप्रवर करीब १४.३ कि.मी. का विहार परिसंपन्न कर मलकापुर में स्थित जिला परिषद हाइ स्कूल में पधारे। आज का

प्रवास यहीं हुआ। स्थानीय मंडल एजुकेशन ऑफिसर श्री जमदाकी, श्री पाण्डु नायक, उपतहसीलदार श्रीमती ममता, प्रिंसिपल के.कृष्ण रेड्डी ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर ने प्रवास स्थल में पहुंचने के कुछ समय पश्चात उन्हें मंगल प्रेरणा प्रदान की।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आज मृगशिर कृष्णा दशमी है। आज का दिन भगवान महावीर का दीक्षा कल्याणक दिन है। उन्होंने युवावस्था में आज के दिन श्रामण्य को स्वीकार किया था, सामायिक चारित्र को स्वीकार किया था, अभिनिष्क्रमण किया था। उन्होंने करीब साढे बारह वर्षों तक प्रकृष्ट और विशिष्ट साधना की, केवलज्ञान और केवलदर्शन को पा लिया। फिर करीब तीस वर्षों के बाद मोक्षश्री का वरण कर लिया। ढाई हजार वर्ष से ज्यादा समय प्रभु महावीर के निर्वाण को हो गया और उससे भी ज्यादा समय उनकी दीक्षा को हो गया।

आज के दिन मैं प्रभु महावीर का सश्रद्धा स्मरण करता हूं। हमारे धर्मसंघ में सात वर्ष पूर्व आज के दिन तैंयालीस आत्माओं ने संयम ग्रहण किया था। वह हमारे धर्मसंघ की अद्वितीय घटना थी। आज के दिन हमारे धर्मसंघ में दीक्षित चारित्रात्माओं के प्रति मेरी मंगलकामना। उनकी साधना आगे बढती रहे। उनको यदा-कदा स्मृति हो कि हमारा दीक्षा दिवस और प्रभु महावीर का दीक्षा दिवस एक है। कभी हम उस रूप में एक बन जाएं कि मोक्ष में चले जाएं।'

११ दिसम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आज प्रातः मलकापुर से चौटुपल की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में यत्र-तत्र अय्यप्पा स्वामी के उपासक पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। काले वस्त्राधारी ये उपासक अपनी विधि के अनुसार इन दिनों विशेष साधना में लीन हैं। विहार के प्रारंभ में हल्की ठंड के कारण जो सूर्य सुवाहना लग रहा था, वही सूर्य अपनी बढती हुई प्रखरता के साथ अखरता जा रहा था। पूज्यप्रवर राष्ट्रीय राजमार्ग ६५ पर गतिमान थे। इस राजमार्ग पर कहीं-कहीं सर्प जाति के कलेवर भी दिखाई दे रहे थे। पूज्यप्रवर १४.३ कि.मी. का विहार कर चौटुपल में स्थित मल्लिकार्जुन हाइ स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन के अन्तर्गत परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में दुःखमुक्ति के लिए साधना करने की प्रेरणा प्रदान की।

आज रात्रि में कुछ युवकों और बच्चों ने संभवतः अपने मनोरजंन के लिए साध्वियों के प्रवास स्थल पर पथराव करना शुरु कर दिया। उन्हें समझाने की कोशिश की गई। वे नहीं माने तो उन्हें कुछ कड़े रूप में हिदायत दी गई। कुछ ही समय पश्चात् पुलिस भी वहां पहुंच गई। तब तक स्थिति भी शांत हो चुकी थी।

सर्दी का मौसम, गर्मी का अहसास

१२ दिसम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः चौटुपल से वेलीमीनेडु की ओर स्थित हुए। क्रमशः तेजस्वी बनता हुआ सूर्य सम्मुखीन बना हुआ था। उत्तर भारत में जहां ठंड क्रमशः बढती जा रही है, वहीं दक्षिण के इस भूभाग में सूर्य की तेजस्विता गर्मी को बरकरार रखे हुए है।

अखिल भारतीय मजदूर युनियन के अध्यक्ष श्री जयप्रकाश नारायण अपने वाहन से अन्यत्र जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने पूज्यप्रवर को देखा तो अपने वाहन को रोककर उन्होंने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। वे बोले--'मैं हैदराबाद चतुर्मास के दौरान आपके दर्शन करना चाहता था, किन्तु व्यस्तता के कारण यह सौभाग्य प्राप्त नहीं हो पाया। आज मुझे अनायास आपके दर्शनों का सुअवसर मिल गया।'

आचार्यप्रवर ने मार्ग में यादाद्रि भुवनगिरि जिले से नलगोंडा जिले में प्रवेश किया। जिला परिवर्तन के साथ पुलिस व्यवस्था में परिवर्तन हुआ। स्थानीय पुलिस ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए अपना दायित्व संभाला तो गत क्षेत्र की पुलिस ने पूज्यप्रवर को वंदन कर विदा ली। आचार्यप्रवर लगभग १३.८ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर वेलीमीनेडु स्थित जिला परिषद हाइ स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में आत्मस्थ रहने की प्रेरणा प्रदान की।

आज मध्याह्न में चटियाल के तहसीलदार श्री रज्ञा नायक, सरपंच श्रीमती डी.मल्लम्मा, जिला परिषद हाइ स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री नरसा रेड्डी आदि कई ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। पूज्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति देते हुए पावन प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से प्रभावित होकर उन लोगों ने पूज्यप्रवर को साग्रह निवेदन किया--'स्वामीजी! आप आज रात्रि में प्रोग्राम रखें। हम पूरे गांव वालों को बुलाएंगे।' उन्हें समझाया गया कि कोरोना महामारी के मद्देनजर अभी भीड़ को एकत्रित करना उचित नहीं है। इसलिए रात्रिकालीन कार्यक्रम नहीं रखे जा रहे हैं। इसके बावूजद रात्रि में गांव की सरपंच आदि कई ग्रामीण पूज्य सन्निधि में पहुंचे। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

१३ दिसम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः वेलीमीनेडु से चटियाल के लिए प्रस्थान किया। गतरात्रिक प्रवास स्थल से राजमार्ग तक पहुंचने के लिए कुछ कम दूरी वाला रास्ता लिया गया। यह मार्ग ऊबड़-खाबड़ पगडंडी के रूप में अवश्य था, किन्तु दोनों ओर से खेतों, वृक्षों आदि से घिरा होने के कारण कुछ रमणीय भी था। विहार के प्रारंभ में हल्की ठंड वातावरण में व्याप्त थी। यह ठंड स्थानीय लोगों के लिए संभवतः कुछ अधिक थी, क्योंकि जहां मुनिवृन्द बिना ऊनी वस्त्र ओढे हुए गतिमान थे, वहीं ग्राम्यजन अलाव जलाकर बैठे हुए दिखाई दे रहे थे। मार्ग में महात्मा गांधी मंदिर दूर से पूज्यप्रवर की दृष्टि का विषय बना।

विहार के दौरान शिव अघोरी नामक बाबा ने पूज्यप्रवर को वंदन किया। उन्होंने बताया कि वे वैष्णोदेवी से कन्याकुमारी की पदयात्रा कर रहे हैं। इस राजमार्ग पर राजस्थान के ट्रकों का आवागमन भी अच्छी संख्या में होता है, इसलिए स्वाभाविक रूप से मार्ग के आसपास राजस्थानी होटल्स और ढाबे भी दिखाई दे रहे थे। उन होटल्स और ढाबों के लोग पूज्यप्रवर को वंदन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। पूज्यप्रवर करीब १२.८ कि.मी. का विहार कर चटियाल में पधारे। जिला परिषद हाइ स्कूल में आज का प्रवास रहा।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में भावशुद्धि के महत्त्व को विवेचित किया।

आज हैदराबाद के विधायक श्री राजासिंह ने पूज्यप्रवर से दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया। आज रात्रि में कुछ बच्चों आदि ने पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल पर पथराव शुरु कर दिया। उन्हें स्नेहपूर्वक समझाने का प्रयास किया गया, किन्तु वे नहीं माने। प्रवास स्थल परिसर में पूज्यप्रवर की सेवा में पुलिस भी उपस्थित थी। पुलिस के लोग वहां पहुंचे और स्थिति को संभाल लिया।

१४ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः चटियाल से नारकेटपल्ली की ओर प्रस्थान किया। सम्मुखीन सूर्य कुछ तीव्रता के साथ आतप बरसा रहा था। इसलिए दिसम्बर माह में भी गर्मी का अहसास हो रहा था। पूज्यप्रवर लगभग ९.५ कि.मी. का विहार कर नारकेटपल्ली में स्थित कामिनेनि इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेस में पधारे। आज अपराह्न तक का प्रवास यहीं हुआ। कॉलेज की प्रिंसिपल श्रीमती श्रुति मोहंती, जनरल मैनेजर श्री पी.एस.रेड्डी, एम.डी.डॉ श्रीधर आदि ने आचार्यप्रवर का सश्रद्धा स्वागत किया। आचार्यप्रवर के पदार्पण से संस्थान परिसर में अलौकिक वातावरण छाया हुआ था। श्रीमती मोहंती, श्री रेड्डी आदि लोग अहिंसा यात्रा के लिए हर संभव व्यवस्था, सहयोग, सुविधा उपलब्ध करा रहे थे। कॉलेज के शिक्षक आदि स्टाफ पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचते जा रहे थे। आचार्यप्रवर उन्हें मंगल आशीष और अनुकूलतानुसार पावन प्रेरणा प्रदान करते जा रहे थे।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने पावन प्रवचन में अल्पलाभ के लिए बहुत को न खोने की प्रेरणा प्रदान दी।

सायं करीब ४.१५ बजे आचार्यप्रवर नारकेटपल्ली से पामेनगुण्डला की ओर प्रस्थित हुए। कॉलेज प्रबन्धन की प्रार्थना पर आचार्यप्रवर प्रस्थान से पूर्व संस्थान परिसर में और भीतर पधारे। प्रिंसिपल श्रीमती मोहंती ने अपनी ऑफिस बिल्डिंग के निकट पूज्यप्रवर का स्वागत किया और अवगति प्रस्तुत करते हुए कहा--'इस संस्थान का निर्माण करीब इक्कीस वर्ष पूर्व हुआ था और आज यहां लगभग एक हजार विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।' पूज्यप्रवर ने संस्थान से संबंधित लोगों को मंगल प्रेरणा प्रदान की। प्रिंसिपल श्रीमती श्रुति ने पूज्यप्रवर के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए कहा--'गुरुजी! आप वाहन का प्रयोग नहीं करते, यह बहुत बड़ी बात है। आप युवाओं के लिए प्रेरणा हैं।' एम.डी.डॉ श्रीधर ने कहा--'हमारा यह सौभाग्य है कि ऐसे महापुरुष हमारे संस्थान परिसर में पधारे। आपके आगमन से हमारा यह प्रांगण पवित्र हो गया।'

आचार्यप्रवर करीब ५.५ कि.मी. का विहार कर पामेनगुण्डला में स्थित जिला परिषद हाइ स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास गांव के बीच बने इसी विद्यालय में हुआ। गांव के सरपंच श्री सैयद रेड्डी आदि लोगों ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। वे यात्रा की व्यवस्थाओं में भी सक्रिय सहयोगी बने हुए थे।

आत्मा ही मित्र और आत्मा ही शत्रु

१५ दिसम्बर। परम पावन आचार्यप्रवर प्रातः पामेनगुण्डला से आईटी पामुला के लिए प्रस्थित हुए। सम्मुखीन सूरज ऊर्ध्वगमन के साथ क्रमशः तेजस्वी भी बनता जा रहा था। मार्ग के आसपास चावल, कपास और गन्ने की खेती बहुलतया दिखाई दे रही थी। आचार्यप्रवर लगभग १२ कि.मी. का विहार कर आईटी पामुला में स्थित जिला परिषद हाइ स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

हाइ स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री शंकरय्या, प्राइमरी के प्रधानाध्यापक श्री चंद्रय्या आदि ने पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया। मध्याह्न में स्थानीय मंडल प्रधान श्री मुतलगिया, सरपंच श्री सैयदलु, कट्टनगुर के सरपंच श्री सतीश आदि ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल प्रेरणा प्रदान की।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में सत्प्रवृत्ति में संलग्न आत्मा को स्वयं की मित्र और दुष्प्रवृत्ति में लगी आत्मा को स्वयं का शत्रु बताते हुए सत्प्रवृत्ति में संलग्न रहने व दुष्प्रवृत्ति से बचने की प्रेरणा प्रदान की।

आज प्रायः दिन भर पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ ग्रामीणों के आने का तांता लगा रहा। पूज्यप्रवर के त्याग-तपोमय जीवन और अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्राप्त कर आगन्तुकों की उत्सुकता श्रद्धाभावों से परिणत होती जा रही थी। पूज्यप्रवर के दर्शन और आशीर्वाद पाने वाले कई लोग अपने-अपने परिजनों व मित्रों के साथ पुनः लौटकर उन्हें पूज्यप्रवर के दर्शन करवा रहे थे।

प्रलम्ब विहार में रही प्राकृतिक अनुकूलता

१६ दिसम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः आईटी पामुला से केथेपल्ली के लिए प्रस्थित हुए। स्थान-स्थान पर खड़े आईटी पामुला के निवासीजन पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। आज का विहार कुछ लम्बा था। बादलों के कारण आज प्रातःकाल ठंड प्रायः नहीं थी और उन्हीं के कारण आज सूर्य अदृश्य या तेज हीन-सा भी बना हुआ था। मौसम की यह अनुकूलता गंतव्य स्थल की अधिक दूरी का अहसास नहीं होने दे रही थी। मार्गवर्ती नकरेकट के ग्रामीणों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष पाने का सौभाग्य मिला। आचार्यप्रवर करीब १६ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर लगभग १०.४५ बजे केथेपल्ली में स्थित डी पोल इ.एम. हाइ स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में अनासक्ति के महत्त्व को विवेचित करते हुए आसक्ति से दूर रहने की प्रेरणा प्रदान की।

आज भी प्रायः दिन भर ग्राम्यजन आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ आते रहे और पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद और यथावसर पावन प्रेरणा प्रदान की।

रोशन हुआ वीरान संस्थान

१७ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः केथेपल्ली से सूर्यपेट की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग के पार्श्ववर्ती पावर प्लांट की चिमनी से उड़ता धुंआ वातावरण को कुछ प्रदूषित बनाए हुए था। धुंए के साथ उड़ने वाले काले कण सफेद वस्त्रों पर स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। मुसी नदी पर बना पुल पूज्यचरणों से पावन बना। आचार्यप्रवर नलगोंडा जिला से सूर्यपेट जिला में प्रविष्ट हुए। लगभग १२ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर सूर्यपेट में स्थित श्री वेंकटेश्वरा इंजिनियरिंग कॉलेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में नश्वर शरीर से अमर आत्मा का कल्याण करने हेतु उत्प्रेरित किया।

कॉलेज के प्रिंसिपल श्री राजा मुथयाला आदि ने पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया। मध्याह्न में वेंकटेश्वरा इंजिनियरिंग कॉलेज के प्रधानाध्यापक श्री राजा मुथयाला के अनुरोध पर पूज्यप्रवर ने विद्यालय के शिक्षकों आदि को उपासना का अवसर प्रदान किया। पूज्यप्रवर ने उन्हें अंग्रेजी भाषा में पावन प्रेरणा प्रदान की। तदुपरान्त जिज्ञासा-समाधान का क्रम चला। पूज्यप्रवर ने समुपस्थित लोगों की जिज्ञासाओं को समाहित किया।

रात्रि में प्रिंसिपल श्री राजा मुथयाला अपने परिवार के साथ पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में पहुंचे। उनका छोटा पुत्र निशान्त पूज्यप्रवर से बोला--'कोरोना के कारण यह संस्थान कई महीनों से वीरान पड़ा था। आज आपके आने से यह रोशन हो गया।'

ज्ञातव्य है कि कोरोना वायरस के कारण अधिकांश विद्या संस्थान १४ अथवा १५ मार्च से बंद पड़े हैं। विद्यालयों आदि के ब्लेक बोर्ड पर प्रायः १३ अथवा १४ मार्च लिखा हुआ दिखाई देता है, जो कि उसके बाद के अवकाश को दर्शाता है। महीनों से बंद पड़े विद्यालयों में धूल आदि इस रूप में जमे हुए हैं कि सफाई के बाद भी उनका प्रभाव नजर आ जाता है।

१८ दिसम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः सूर्यपेट से चिवमला के लिए प्रस्थान किया। इस अवसर पर श्री वेंकटेश्वरा इंजिनियरिंग कॉलेज के प्रिंसिपल श्री राजा मुथयाला अपने पुत्र के साथ पूज्यप्रवर के उपपात में उपस्थित हुए और अपने कृतज्ञभाव पूज्यप्रवर को समर्पित किए। आकाश में बादलों की उपस्थिति सूर्य की तेजस्विता को मन्द बनाए हुए थी।

आज से पूज्यप्रवर के विहार की दिशा परिवर्तित हुई। पूज्यप्रवर राष्ट्रीय राजमार्ग से भद्राचलम की ओर जाने वाले पथ पर पधारे। गत कई दिनों से आन्ध्रप्रदेश का विजयवाड़ा क्रमशः निकट होता जा रहा था। राजमार्ग के पीछे छूटने के साथ विजयवाड़ा से दूरी अब क्रमशः बढती जा रही है, किन्तु लोगों ने बताया इस पथ पर बढते रहने से भी विजयवाड़ा से निकटता पुनः बढेगी। पूज्यप्रवर का विहार पथ राजमार्ग की अपेक्षा काफी संकड़ा था। इस पथ पर एक साथ दो बड़े वाहनों के आवागमन का ही अवकाश था। पूज्यप्रवर को यातायात की अधिकता के कारण कोई असुविधा न हो, इस हेतु पुलिस निष्ठा के साथ जुटी हुई थी। आचार्यप्रवर लगभग १०.५ कि.मी. का विहार संपन्न कर चिवमला में पधारे। जिला परिषद हाइ स्कूल में आज का प्रवास हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में मन को सुमन बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

शासनश्री मुनि हर्षलालजी स्वामी की आत्मकथा 'मेरा जीवन प्रवाह' जैन विश्व भारती की ओर से पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की गई। पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'शासनश्री मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी

हमारे धर्मसंघ के एक विशिष्ट संत, अच्छे संत हैं। उनकी आत्मकथा छोटी-सी पुस्तक के रूप में आई है। यह पाठक को अच्छी प्रेरणा देने वाली बने।'

मध्याह्न में स्थानीय सरपंच श्री बोयला कृष्णा आदि ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

आज भी बड़ी संख्या में ग्रामीण लोग पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचे। साधुचर्या और अहिंसा यात्रा के विषय में जानकारी प्राप्त करने के उपरान्त उनके भीतर पूज्यप्रवर के प्रति आस्था का भाव अनायास उत्पन्न हो रहा था। वे लोग आचार्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद पाकर धन्यता की अनुभूति कर रहे थे।

इस क्षेत्र में ग्राम्यजनों में संन्यासी वर्ग के प्रति सहज श्रद्धाभाव देखने को मिल रहा है। विहार के दौरान यत्र-तत्र खड़े लोग अहिंसा यात्रा, पूज्यप्रवर आदि के विषय में जिज्ञासा करते हैं और जानकारी प्राप्त कर वे आचार्यप्रवर के स्व-परकल्याणकारी व्यक्तित्व के प्रति सहज ही प्रणत हो जाते हैं। प्रवास स्थल में दर्शन करने वाले लोगों में से कई लोग अपने स्वजनों, मित्रों आदि के साथ पुनः आते हैं और उन्हें भी पूज्यप्रवर के दर्शन करवाते हैं।

१९ दिसम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः चिवमला से मोथे के लिए प्रस्थान किया। विहार के प्रारंभ में सूर्य की तेजस्विता मंद थी तो सर्दी कुछ हावी थी, किन्तु सूर्य अपने उर्ध्वारोहण के साथ सर्दी पर हावी होता गया। आचार्यप्रवर करीब १३ कि.मी. का विहार परिसंपन्न कर मोथे में स्थित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती धनलक्ष्मी आदि ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में हेय, ज्ञेय और उपादेय-इन तीन शब्दों की विवेचना करते हुए ज्ञेय को जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने की प्रेरणा प्रदान की।

सायंकाल करीब ४.१५ बजे परमाराध्य आचार्यप्रवर मोथे से ममिलागुदेम के लिए प्रस्थित हुए। प्रातःकाल कुछ सम्मुखीन रहने वाला सूर्य इस समय पीठ की ओर था। प्रातःकाल वह उर्ध्वारोहण कर रहा था तो इस समय क्रमशः ढलता जा रहा था। इस कारण मौसम अनुकूलता को धारण किए हुए था। सांई जगदीश मंदिर के एक संन्यासी श्री सांई पूज्यप्रवर को उपहृत करने की भावना से कुछ फल लेकर आए। उन्हें साधुचर्या की अवगति दी गई। पूज्यप्रवर करीब ५.५ कि.मी. का विहार कर ममिलागुदेम में स्थित जिला परिषद हाइ स्कूल में पधारे। आज का रात्रिककालीन प्रवास यहीं हुआ।

भारतीय जनता पार्टी के स्थानीय जिला अध्यक्ष श्री मल्ला रेड्डी ने आज सायंकाल पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने पूज्यप्रवर से आगामी कल अपने स्थान में पधारने व वहां प्रवास करने की प्रार्थना की।

२० दिसम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः ममिलागुदेम से कुसुमन्ची की ओर प्रस्थान किया। मार्ग के परिपार्श्व में खड़े ग्रामीण दर्शनार्थी करबद्ध होकर पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर रहे थे और आचार्यप्रवर अपने करकमलों से उन पर आशीषवृष्टि कर रहे थे। विहार पथ के आसपास सड़क के विस्तारीकरण का कार्य जारी था। उसके लिए अनेक विशालकाय वृक्षों का काटा गया है। धराशायी किए गए वृक्षों के विशाल तने मानवों द्वारा अपनी सुविधा के लिए किए जा रहे प्रकृति के दोहन को दर्शा रहे थे। नागार्जुन सागर बांध से निकलने वाली नहर पर बने पुल से पूज्यप्रवर इस पार पधारे।

आज के विहार पथ में अय्यप्पा स्वामी के उपासकों ने भी बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। उनमें से कइयों ने तो अपनी परंपरानुसार अपनी कमीज उतारकर पूज्यचरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित की। कुछ लोग जैन ध्वज लेकर पूज्यप्रवर के आगे-आगे चले। ये लोग वर्तमान में ४१ दिनों की साधना में रत हैं। इन दिनों में वे कई नियमों का पालन करते हैं।

पालेडू में कई ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के सभक्ति दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। गांव की कुछ महिलाएं आचार्यप्रवर के चरणामृत को पाना चाहती थीं। उन्होंने इस भावना से पूज्यप्रवर के मार्ग में पानी गिरा दिया। उन्हें साधुचर्या की जानकारी दी गई। पूज्यप्रवर उस सचित्त पानी के स्पर्श से बचते हुए आगे पधारे। ग्राम्य महिलाओं ने पूज्यप्रवर को वंदन किया तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्यप्रवर नागार्जुन सागर बांध के समीप से आगे पधारे। बांध का पानी विस्तार लिए हुए दिखाई दे रहा था।

भारतीय जनता पार्टी के स्थानीय जिला अध्यक्ष मल्ला रेड्डी ने अपने साथियों के साथ मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन किए। पूज्यप्रवर उनके अनुरोध पर उनके स्थान पर पधारे और वहां कुछ क्षण विराजमान होकर उन्हें मंगल प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर की प्रेरणा से प्रभावित होकर उन लोगों ने अहिंसा यात्रा की प्रतिज्ञाएं स्वीकार कीं।

श्री मल्ला रेड्डी ने पूज्यप्रवर के प्रति अपने कृतज्ञभाव अर्पित किए। वे और उनके साथी भावविभोर होकर काफी दूर तक पूज्यप्रवर की सेवा में चले। मार्ग में पूज्यप्रवर सूर्यपेट जिले से खम्मम जिले में प्रविष्ट हुए। आचार्यप्रवर करीब १२.५ कि.मी. का विहार कर कुसुमन्ची में पधारे। स्थानीय जिला शिक्षा अधिकारी श्रीमती ज्योति ने पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया। इन्टिग्रेटेड बायज् हॉस्टल में पूज्यप्रवर का आज का प्रवास हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने मंगल प्रवचन में मोहनीय कर्म को प्रतनु बनाने हेतु सतत पुरुषार्थ करने की प्रेरणा प्रदान की।

२१ दिसम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः कुसुमन्ची से ताल्लमपडु की ओर प्रस्थान किया। कुसुमन्ची के ग्रामीणों ने विहार के दौरान पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद का लाभ प्राप्त किया। विहार पथ के आसपास मिर्ची, गोभी, भिंडी, कपास, पपीता आदि की खेती प्रचुरता लिए हुए दिखाई दे रही थी। जिलाचेरु नामक गांव के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। पूज्यप्रवर करीब १०.२ कि.मी. का विहार कर ताल्लमपडु में पधारे। स्कर्ड हार्ट डिग्री कॉलेज में आज सायं का प्रवास हुआ। कॉलेज के चेयरमेन स्टीफन आर.के.स्वामी ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कर्तव्यनिष्ठा को हृदयंगम बनाने और श्रावकत्व के प्रति सजग रहने की प्रेरणा प्रदान की।

सायंकाल करीब ३.४४ बजे पूज्यप्रवर ताल्लमपडु से महुलापल्ली की ओर प्रस्थित हुए। श्री स्टीफन आर.के.स्वामी ने श्रीचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए। पूज्यप्रवर करीब ६.३ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर महुलापल्ली में स्थित स्वर्ण भारती कॉलेज ऑफ इंजिनियरिंग में पधारे। आज रात्रि का प्रवास यहीं हुआ।

आराध्य के आगमन से आह्लादित हुआ खम्मम का श्रद्धालु परिवार

२२ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः महुलापल्ली से खम्मम की ओर प्रस्थान किया। महुलापल्ली के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। इन दिनों प्रायः प्रतिदिन पुलिस जागरूकतापूर्वक अपना दायित्व निभा रही है, किन्तु आज जिन जवानों की ड्यूटी थी, वे पूज्यप्रवर की सुरक्षा आदि के प्रति विशेष जागरूक दिखे। उन्होंने इस प्रकार व्यवस्था की कि पूज्यप्रवर के करीब से कोई वाहन

आदि न निकल पाए। पूज्यप्रवर जिस समय नर्मदा नदी के पुल पर गतिमान थे, उस समय पुलिस ने वाहनों के पुल पर आने-जाने दोनों तरफ का मार्ग रोक दिया। नर्मदा नदी के पानी में ज्यादा गहराई तो नजर नहीं आ रही थी, किन्तु नदी का चौड़ा पाट वर्षा के मौसम में नदी की गहराई और उसके वेग को अनुमानित करा रहा था।

मार्ग में पूर्व सांसद श्री पोंगुलेटी श्रीनिवास रेड्डी ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। वे बोले--'स्वामीजी! हमारे क्षेत्र में आपका आना हुआ है, यह हमारे लिए बहुत ही हर्ष और सौभाग्य की बात है। आपके आशीर्वाद से हमारा यह क्षेत्र तरक्की करेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।'

पूज्यप्रवर का पावन पदार्पण खम्मम के एक तेरापंथी परिवार सहित अन्य जैन समाज को हर्षाभिभूत बनाए हुए था। बोलोतरा का भंडारी परिवार अपने शहर में अपने आराध्य को पाकर अत्यन्त उल्लसित था। अपने घर के समीप भंडारी परिवार को पूज्यप्रवर के दर्शन और श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सौभाग्य मिला। पूज्यप्रवर लगभग १३ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर खम्मम में स्थित एस.आर.गार्डन में पधारे। आज सायंकाल का प्रवास यहीं हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में शक्ति के विकास और सदुपयोग की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर ने खम्मम आगमन के संदर्भ में कहा--'आज हमारा यहां आना हुआ है। यहां बालोतरा का भंडारी परिवार है, जैन समाज के और भी लोग रहते हैं। यहां के लोगों में धार्मिक भावना बनी रहे।'

कार्यक्रम के दौरान श्री दिनेश भंडारी, बालिका सिद्धि भंडारी, ऋद्धि भंडारी, उन्नति भंडारी और श्री निलेश राठी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आज सायंकाल लगभग ४.१५ बजे पूज्यप्रवर खम्मम से अम्मपलेम की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग पर कुछ भिन्न प्रकार के जीवों की बहुलता पूज्यचरणों की गति को मंद करने वाली सिद्ध हुई। इन जीवों की गति और आकार मकौड़ों जैसे थे, किन्तु उनका लाल रंग मकौड़ों से उनकी भिन्नता को दर्शा रहा था। पूज्यप्रवर का जीवों के प्रति अनुकम्पाभाव चरणों की गति को मंद करने वाला बन गया। पूज्यप्रवर करीब ४.२ कि. मी. का विहार कर अम्मपलेम में पधारे। बाउन कॉलेज ऑफ फार्मेसी में आज का रात्रिकालीन प्रवास हुआ। कॉलेज के ऑनर श्री हनुमन्तराव, प्रिंसिपल डॉ.वी.जगन्नाथ आदि ने आचार्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया।

रात्रि में स्थानीय जिला शिक्षा अधिकारी श्री मदन मोहन गुरु, सहायक शिक्षा अधिकारी श्री माधवराव आदि पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। पूज्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान कर पावन संबोध प्रदान किया।

निकट हुआ विजयवाड़ा

२३ दिसम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः अम्मपलेम से वायरा की ओर प्रस्थित हुए। अम्मपलेम के ग्रामीणों ने मार्ग में आचार्यप्रवर को वन्दन किया तो आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया। मार्ग के आसपास खेती की बहुलता दिखाई दे रही थी। पौधों पर लगा हुआ कपास और लाल मिर्ची राहगीरों के ध्यान अनायास अपनी ओर खींच रहे थे। इन दोनों की प्रचुर फसल के साथ-साथ किसानों के द्वारा किया जा रहा तुअर की दाल, नीलगिरी आदि के उत्पाद का प्रयास भी दिखाई दे रहा था। कुछ आगे बढने के बाद मकई की खेती भी प्रचुरतया नजर आने लगी।

मार्ग में पल्लीपाडु की दो महिलाएं पूज्यप्रवर के सम्मुख उपस्थित हुईं और आचार्यप्रवर को वंदन कर अपना दुःख पूज्यप्रवर के समक्ष प्रस्तुत किया। पूज्यप्रवर ने अपने चरण थामकर उनकी पीड़ा को सुना और उन्हें मंगलपाठ सुनाया। वैष्णवी डेयरी के ऑनर श्री मुरलीधर भूतला ने मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन कर

मार्ग के समीपस्थ अपनी डेयरी में पधारने की प्रार्थना की। उन्हें निर्धारित व्यवस्था की जानकारी दी गई। पूज्यप्रवर डेयरी के निकट से आगे पधार रहे थे, तब डेयरी के स्टाफ आदि ने श्री भूतला के साथ पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्यप्रवर लगभग १३ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर वायरा में स्थित न्यू लिटिल फ्लोवर ईआईएम स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने पावन प्रवचन में अहिंसा की महत्ता को विवेचित करते हुए उसे आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की।

वायरा से विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश) मात्र करीब एक सौ पन्द्रह कि.मी. ही दूर है। विजयवाड़ा के कुछ श्रद्धालुजन गत कई दिनों से प्रायः प्रतिदिन पूज्यप्रवर के दर्शन-सेवा हेतु पहुंच रहे हैं। प्रतिदिन लगभग सैंकड़ों किलोमीटर की यात्रा अनभ्यस्त लोगों के लिए कठिन भले हो, किन्तु आचार्यप्रवर का आकर्षण श्रद्धालुओं को अपनी ओर खींच ही लेता है और पूज्यप्रवर के दर्शन से यात्रा की थकान भी मानों काफूर हो जाती है।

आज दिन में यदा-कदा पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ लोगों के आने का क्रम चलता रहा। उत्सुकतापूर्वक आए लोग आचार्यप्रवर के पवित्र आभामंडल से प्रभावित होकर मन में श्रद्धाभाव लिए लौट रहे थे।

२४ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः वायरा से तल्लाडा की ओर प्रस्थान किया। गत कल विहार मार्ग में पूज्यप्रवर के समक्ष अपनी पीड़ा प्रस्तुत कर मंगलपाठ सुनने वाली महिला ने आज पुनः पूज्यप्रवर के दर्शन कर श्रीमुख से मंगलपाठ का श्रवण किया। वायरावासियों को भी मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद पाने का सौभाग्य मिला। मार्ग के समीपस्थ हॉस्टल की छात्राओं ने हॉस्टल के प्रथमतल से ही पूज्यप्रवर को वंदन किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीष प्रदान की। 'पीनपानक' गांव के ग्रामीणों ने भी आचार्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

मार्ग के दोनों और खेतों में कहीं लाल मिर्ची तो कहीं कपास की फसल विपुलमात्रा में दिखाई दे रही थी। लोगों ने बताया कि आंध्रप्रदेश और तेलंगाना जब एक ही राज्य के रूप में थे, तब भारत में मिर्ची की खपत सबसे ज्यादा इसी राज्य में होती थी।

तल्लाडा का नेरला वेंकटेश्वर राव आलिया चिन्न स्वामी नामक व्यक्ति पूज्यप्रवर को उपहृत करने के लिए रुपए लेकर आया। साधुचर्या को जानकर उसने अपनी भावना का संवरण किया। पूज्यप्रवर की अपरिग्रह की साधना के प्रति उसके मन में उपजा श्रद्धाभाव उसकी भावभंगिमा पर भी दिखाई देने लगा।

तल्लाडा में यत्र-तत्र खड़े ग्रामीण पूज्यप्रवर को वंदन कर रहे थे तो आचार्यप्रवर उन पर आशीषवृष्टि कर रहे थे। आचार्यप्रवर करीब ११.७ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर तल्लाड़ा में बालभारती विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के ऑनर श्री प्रवीण कोटागिरि, प्रिंसिपल श्री टी. रामाराव आदि ने आचार्यप्रवर की भावपूर्ण अगवानी की। तल्लाड़ा के सरपंच श्री ब्रह्म रेड्डी तथा रेडीगुड्डा के सरपंच श्री कोटिया रेड्डी ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कषाय को प्रतनु बनाने हेतु उत्प्रेरित किया। आज तल्लाड़ा के ग्रामीण बड़ी संख्या में आचार्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित हुए।

श्री तुलसी दुगड़ जय तुलसी फाउण्डेशन के प्रबन्ध न्यासी पुनर्निर्वाचित

गत १ नवम्बर को जय तुलसी फाउण्डेशन के ट्रस्ट बोर्ड की बैठक में श्री तुलसी दुगड़ (रतनगढ़-कोलकाता) को जय तुलसी फाउण्डेशन के आगमी सत्र के लिए प्रबन्ध न्यासी के रूप में पुनर्निर्वाचित किया गया। श्री दुगड़ ने कुछ दिनों बाद पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। उनके द्वारा महामंत्री के रूप में श्री सुरेन्द्रकुमार बोरड़ को पुनः मनोनीत किया गया।

12 Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2021-23 Wed.-Thu.
Date of Publication : 04-01-2021 L.No.-U (C) 200/2018-2020
(Page 1-12) Licence to Post without Pre-payment
1- 7 जनवरी 2021 Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ समाज से विनम्र अनुरोध
संदर्भ : रायपुर मर्यादा महोत्सव

परम पूज्य आचार्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में रायपुर में १६-१९ फरवरी २०२१ को मर्यादा महोत्सव का चार दिवसीय कार्यक्रम समायोज्य है। कोरोना महामारी की परिस्थिति को देखते हुए यह कार्यक्रम वर्चुअल रूप में ही रखने का चिन्तन किया गया है। इस संदर्भ में कुछ व्यवस्थाएं इस प्रकार हैं-

- चार दिनों के कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण पारस चैनल और यूट्यूब के तेरापंथ चैनल पर किया जाएगा, श्रद्धालुजन अपने-अपने घरों आदि से ही इस कार्यक्रम में संभागी बनने का प्रयास करें।
- छत्तीसगढ़ व ओड़िशा निवासी श्रद्धालुओं के सिवाय देश-विदेश के किसी भी क्षेत्र से कोई भी श्रद्धालु मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम में संभागी बनने व पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उन चार दिनों में रायपुर में न जाए व न रहे। अपने-अपने ज्ञातिजनों के यहां जाना आवश्यक हो तो आपत्ति नहीं।
- छत्तीसगढ़ व ओड़िशा के श्रद्धालुजन भी मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम में संभागी बनने व पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ संघबद्ध रूप में न जाएं। इस संदर्भ में दस से अधिक व्यक्तियों के समूह को संघ माना जाए।
- चार दिवसीय कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ व ओड़िशा के श्रद्धालुओं की भी मात्र दर्शक एवं श्रोता के रूप में प्रत्यक्ष संभागिता नहीं हो सकेगी।
- प्रतिवर्ष मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आयोजित होने वाली तेरापंथी महासभा की वार्षिक साधारण सभा के सिवाय केन्द्रीय संस्थाओं सहित कोई भी संघीय संस्था (स्थानीय के सिवाय) अपनी कोई भी मीटिंग पूज्यप्रवर के प्रवास के दौरान रायपुर में न रखे।
- १७ फरवरी २०२१ को सायं ४ बजे से समायोज्य महासभा की वार्षिक साधारण सभा में उपस्थित होने वाले सदस्यों को रेल, वायुयान आदि की अनुकूलता की दृष्टि से रायपुर में रुकना आवश्यक हो तो वे मर्यादा महोत्सव के चार दिनों में एक रात्रि से अधिक रात्रिप्रवास रायपुर में न करें।
- चतुर्मास आदि की प्रार्थना के लिए भी रायपुर जाने की अपेक्षा नहीं है। पूज्यप्रवर के निवेदनार्थ अपना प्रार्थना पत्र महासभा शिविर कार्यालय के ई-मेल office@terapanth.com अथवा मोबाइल नम्बर ७०४४४४८८८८ पर प्रेषित किया जा सकता है।
- किसी अत्यावश्यक कार्यवश निर्धारित व्यवस्थाओं से भिन्न रूप में पूज्यसन्निधि में पहुंचना अपेक्षित हो तो पहले महासभा शिविर कार्यालय में लिखित आवेदन कर लिखित स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक है।

सुरेश चंद गोयल
अध्यक्ष
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com
ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा प्रिंट मास्टर इन्टरप्राइजेज, एल.एल.पी-६३ जी.एफ.पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला